ईमानदारी

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए
ऑल पीपल्स चर्च एण्ड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करण: 2024

संपर्क जानकारी
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email**: bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

जब तक, अन्य रूप से संकेत न दिया गया हो, धर्मशास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया(BSI) द्वारा प्रकाशित, पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित हैं। आर्थिक साझेदारी

आर्थिक साझेदारी
इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता के कारण संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता हेतु आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाइए या अपना योगदान कैसे करें, यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे “ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता” पृष्ठ को देखीए। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन और संबंधित वेबसाइटें
उपदेश: apcwo.org/sermons। **पुस्तकें:** apcwo.org/books। **चर्च ऐप:** apcwo.org/app
बाइबल कॉलेज: apcbiblecollege.org। **ई लर्निंग:** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्श सेवा: chrysalislife.org । **संगीत:** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: pamfi.org। **एपीसी वर्ल्ड मिशन्स:** apcworldmissions.org

(Hindi – Integrity)

ईमानदारी

विषयसूची

परिचय

1. ईमानदारी के विषय में निर्देश 1

2. परमेश्वर हमारी ईमानदारी को जाँचता और जानता है (या उसके अभाव को!) 6

3. हम अब भी ईमानदारी के साथ समझौता क्यों करते हैं? 8

4. बेईमानी के परिणाम 12

5. ईमानदार लोगों की आशीषें 16

6. प्रतिक्रिया—मुक्ति, पश्चाताप, त्याग, और समर्पण 19

परिचय

हम सभी के पास संसार में दिखाई देने वाले भ्रष्टाचार के बारे में बताने के लिए कई कहानियाँ हैं, विशेषतः जब हम सरकारी कार्यालयों एवं अन्य स्थानों पर जाते हैं । हम लगभग सभी जगह भ्रष्टाचार, बेईमानी, और रिश्वतखोरी का सामना करते हैं। यह सामान्य स्तर जैसा प्रतीत होता है। बेईमानी, धोखाधड़ी और झूठ स्वीकार्य प्रतीत होते हैं,जबतक ऐसा करने के कारण उपस्थित हों।

जबकि यह वास्तव में दुखःद बात है जब हम परमेश्वर के लोगों और हमारे बीच—बेईमानी, अधर्म, और ईमानदारी का अभाव देखते हैं—कम से कम हमें यह अच्छे से पता होना चाहिए! हमें जानना चाहिए कि सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, शुद्धता, और धार्मिकता में कैसे चलना है, क्योंकि हम परमेश्वर का वचन पढ़ते हैं और उन सारी बातों को जानते हैं जो वह हमें सिखाता है। अधिक बुरा तब लगता है जब हम पास्टरों, प्रचारकों, शिक्षकों, और वचन के सेवकों के मध्य अधर्म, बेईमानी, और ईमानदारी का अभाव देखते हैं। मुझे विश्वास है कि हम में से कई "मसीही" रिश्वतखोरी, झूठ, या बेईमानी इत्यादि की कहानियां बता सकते हैं!

जब हमने ऑल पीपल्स चर्च की स्थापना की और बैंगलोर में पास्टर के रूप में सेवकाई का आरंभ किया, तब हमने यह मानसिकता निश्चित की कि, प्रत्येक मसीही सत्य बोलेगा। हमने ऐसा इसलिए सोचा क्योंकि इससे पहले जब हमने छोटे समुदायों के साथ कार्य किया था और जिनके साथ हमने परस्पर बातचीत की थी, उनमें से अधिकांश लोग सच बोलते थे और हम सिर्फ(बस) लोगों पर निःसंदेह विश्वास रखते थे। अतः हम भी वही धारणा लेकर चले। अतः, जब

हमारा सामना झूठ बोलने वाले मसीहियों से हुआ तो हम हैरान रह गए! हमारी तत्काल प्रतिक्रिया अविश्वास थी—"मसीहियों को झूठ नहीं बोलना चाहिए, अधर्म का व्यवहार नहीं करना चाहिए, और ईमानदारी के अभाव के साथ आचरण नहीं करना चाहिए!"

जब हमारी मुलाकात ऐसे पास्टरों से और परमेश्वर के सेवकों से हुई जो बेईमान थे। मैं "अच्छे" संदेश सुनने और यहां तक कि उनके "कार्यों" की तस्वीरें देखने की ऐसी कई घटनाएं याद कर सकता हूं। ऐसे कई अवसर भी आए जब उनकी बातों पर विश्वास करते हुए मैंने उनके लिए कई हज़ार रुपयों के चेक लिखे। फिर अंत में मुझे लगा कि हम लोगों की बातों पर मुँह देखकर विश्वास नहीं कर सकते। तब हम ऐसे बिंदु पर पहुँच गए जहाँ हम लोगों पर तब तक विश्वास नहीं करते जब तक कि हम वास्तव में आश्वस्त न हो जाएँ! हमें अपनी सोच को फिर से नियोजित करना पड़ा। हम ऐसी स्थिति में आ गए जहां हमें लोगों पर पूर्णतः विश्वास करने से पूर्व उनका आकलन करना आवश्यक लगा।

इस लेखन के उद्देश्य परमेश्वर के लोगों के रूप में, नीचे दी गई बातों द्वारा हमारी अंतरात्मा को जागृत करना हैं:

- खराई के प्रति प्रतिबद्धता।
- ईमानदारी के प्रति प्रतिबद्धता।
- हमारी बातचीत में, जिस प्रकार हम अपना व्यवसाय चलाते हैं, करियर बनाते हैं और जो कुछ भी हम करते हैं उसमें ईमानदारी और धार्मिकता के प्रति प्रतिबद्धता। हमारा दृष्टिकोण यह होना चाहिए, "चाहे इसका हमें जो भी मूल्य चुकाना पड़े, हम धार्मिकता के प्रति प्रतिबद्ध रहेंगे।"
- ईमानदारी में चलने की आशीषों के प्रति जागरूकता। हमें इस बात की समझ नहीं होती कि जब हम झूठ बोलने की सुविधा का

विकल्प चुनते हैं तब हम उन आशीषों से वंचित रह जाते हैं जो परमेश्वर के पास हमें देने के लिए हैं।

- प्रभु के प्रति समर्पण और उन बंधनों को तोड़ने की अनुमति देना जिन्होंने हमें बांध रखा है ताकि हम उन क्षेत्रों में परिवर्तन को समझ सकें। हम में से कुछ लोग स्वयं को बाध्य पाते हैं और सत्य बोल नहीं पाते, जबकि वास्तव में वे सच बोलना चाहते हैं। यदि ऐसा है, तब हमें संभवतः झूठ बोलने वाली और धोखा देने वाली आत्माओं से छुटकारा पाने की आवश्यकता है जिस बारे में बाइबल बताती है।

परमेश्वर आशीष दे!
आशीष रायचूर

1
ईमानदारी के विषय में निर्देश

बाइबल हमें ईमानदारी, धार्मिकता और खराई में चलना सिखाती है।

नीतिवचन 6:16-19
16 छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन् सात हैं जिन से उसको घृणा है:
17 अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई आँखें, झूठ बोलने वाली जीभ, और निर्दोष का लहू बहाने वाले हाथ,
18 अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन, बुराई करने को वेग दौड़नेवाले पाँव,
19 झूठ बोलनेवाला साक्षी और भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य।

नीतिवचन 6:16-19 उन बातों को सूचित करता है जिनसे परमेश्वर घृणा करता है। इनमें झूठ बोलना, बुरी योजना बनाना, बुरे काम करना, झूठी गवाही देना, और कलह पैदा करना आदि बातें सम्मिलित हैं। उदाहरण के तौर पर, यदि किसी कम्पनी का अकाउंटेंट रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए आकड़ों में हेराफेरी करता है, और ऐसी रिपोर्ट प्रस्तुत करता है जिसमें ईमानदारी नहीं है, तो यह झूठ की योजना बनाना है। यदि हम कहते हैं कि हमने ऐसा कुछ देखा जो वास्तव में हमने कभी नहीं किया, यह झूठी गवाही देना है जो उनकी (परमेश्वर की) दृष्टि में तिरस्कृत है।

नीतिवचन 12:22
झूठों से यहोवा को घृणा आती है, परन्तु जो विश्वास से काम करते हैं, उन से वह प्रसन्न होता है।

परमेश्वर “झूठ बोलने वाले होठों” को सिर्फ चारित्रिक दोष मानकर अनदेखा नहीं करेगा। और न ही उसे क्षमा करेगा। वास्तविकता यह

है कि यह प्रभु के लिए तिरस्कृत हैं। इससे पता चलता है कि वह इसे बिल्कुल भी सहन नहीं करता है। दूसरी ओर, जो ईमानदारी के साथ व्यवहार करते हैं, वह उन से प्रसन्न होता है। यदि हम अपनी नौकरी, अपनी अर्थव्यवस्था में, और हमारे जीवन के हर क्षेत्र में ईमानदार होने के प्रति प्रतिबद्ध हैं, तो हम उसकी प्रसन्नता का कारण हैं। यह हमें बाइबल बताती है । जब हम ईमानदारी के साथ व्यवहार करते हैं, तब परमेश्वर अत्यंत प्रसन्न होता है। मान लीजिए कि हमारा अधिकारी हमें ऐसा कुछ करने के लिए कहता है जो सच नहीं है, तो यह निर्णय लेना हमारे हाथ में है कि हम अपने परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं या अपने अधिकारी को। निर्णय या चुनाव पूर्णतः हमारा है। हमें ईमानदारी के प्रति पूर्णतः प्रतिबद्ध रहने की **आवश्यकता** है।

निर्गमन 23:6-8
6 तेरे लोगों में से जो दरिद्र हों उसके मुक़द्दमे में न्याय न बिगाड़ना।
7 झूठे मुक़द्दमे से दूर रहना, और निर्दोष और धर्मी को घात न करना, क्योंकि मैं दुष्ट को निर्दोष न ठहराऊँगा,
8 घूस न लेना, क्योंकि घूस देखने वालों को भी अन्धा कर देती और धर्मियों की बातें पलट देती है।

यह उपहासजनक है, जब हम कभी-कभी सोचते हैं कि हमें झूठ का सहारा लेकर सत्य की रक्षा करनी चाहिए! यह अनावश्यक है क्योंकि सत्य अपने पक्ष में स्वयं ही खड़े रहेगा और हमें अपने झूठ से उसे बचाने की आवश्यकता नहीं है। कार्यस्थल पर इस परिस्थिति पर विचार करें जो प्रायः होता है—आपको कोई सहयोगी फोन करता है, और बिनती करता है कि अधिकारी को यह सूचित करे कि वह अस्वस्थ है, जबकि वह स्वस्थ है और कुछ और कार्य के लिए अवकाश लेने की योजना बना रहा है। आप ऐसा करने के लिए सहमत होते हैं और अधिकारी से झूठ बोलते हैं। आप सोचते हैं कि दोस्त की सहायता करके आपने कुछ अच्छा किया, लेकिन आप झूठ बोल रहे हैं क्योंकि आप जानते हैं कि आपका दोस्त अस्वस्थ नहीं है बल्कि कोई निजी

काम कर रहा है। ईमानदारी यह है कि आप उसके झूठ में उसके साझेदार हो गए हैं। निर्गमन 23:7 हमसे कहता है कि *झूठे मुकद्दमे से दूर रहना चाहिए।* ऐसी बातों में सम्मिलित न हों। अपने सहकर्मी को यह बताने का साहस रखें कि वह अधिकारी के साथ सच बोले। हम कभी कभी ऐसी बातों में सम्मिलित होते हैं क्योंकि हम सोचते हैं कि हम अपने दोस्तों पर मेहरबानी(कृपा) कर रहे हैं। नहीं, हम नहीं कर रहे हैं!

भजन संहिता 34:13
अपनी जीभ को बुराई से रोक रख, और अपने मुँह की चौकसी कर कि उससे छल की बात न निकले।

हमें अपनी जीभ पर नियंत्रण रखने के लिए कहा गया है (भजन संहिता 34:13)। याद रखें कि हमारी जीभ हमारे नियंत्रण में है न कि शैतान के नियंत्रण में। कुछ लोग यह कहकर बहाना बनाते हैं, "शैतान ने मुझे झूठ बोलने पर मज़बूर किया।" सच तो यह है कि उन्होंने झूठ बोला। ऐसे भी कुछ लोग हो सकते हैं जो इस बंधन में हैं कि शैतान उन्हें अनियंत्रित झूठ बोलने की सीमा तक प्रभावित कर रहा है और इस बंधन को यीशु के नाम पर तोड़ा जा सकता है। फिर भी अंत में, हमारी जीभ हमारे नियंत्रण ही में होती है। आइए हम शैतान, हमारे माता-पिता, हमारे रिश्तेदारों, या जिसमें हम पले-बढ़े उस वातावरण को दोष न दें। क्योंकि हमें स्वयं ही झूठ बोलने की आदत है। हमें बस अपनी जीभ पर नियंत्रण रखना सीखना है।

एक और बहाना जिसका हम झूठ बोलते समय प्रयोग करते हैं, वह है, "परमेश्वर मेरे हृदय को जानता है। मैं वास्तव में बहुत ईमानदार हूं, हालांकि मैंने थोड़ा झूठ बोला।" हम इस बात की चिंता नहीं करते कि लोगों पर इसका क्या प्रभाव पड़ सकता है। परंतु नया नियम हमें सिखाता है कि हमें न केवल परमेश्वर की दृष्टि में ईमानदार होने की

आवश्यकता है बल्कि मनुष्यों की दृष्टि में भी ईमानदार होना है। हमारे लिए यह कहना पर्याप्त नहीं है कि , "परमेश्वर मुझे देखता है और मेरे हृदय को जानता है।" बाइबल यह भी कहती है कि हमें मनुष्यों के सामने भी ईमानदार होना है। *"बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उनकी चिंता किया करो"* (रोमियों 12:17)। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति को बहुत बड़ी आवश्यकता है। वह अपनी आवश्यकता के लिए किसी और के पास से चोरी करके यह बहाना नहीं बना सकता कि "परमेश्वर मुझे और मेरी स्थिति को जानता है। मैं सामान्यतः ऐसा नहीं करता। यह मैंने अपनी बड़ी आवश्यकता के कारण किया।" परमेश्वर केवल आवश्यकता के कारण चोरी करने को क्षमा नहीं करेगा, और न ही मनुष्य क्षमा करेगा!

2 कुरिन्थियों 8:21
क्योंकि जो बातें केवल प्रभु ही के निकट नहीं, परन्तु मनुष्यों के निकट भी भली हैं हम उनकी चिन्ता करते हैं।

पौलुस समझाता है कि, वह उन्हें दी जाने वाली भेंटों को किस प्रकार एकत्रित करता था और कलीसिया द्वारा दी गई धनराशि को वह किस प्रकार संभालता था । उसके आचरण में एक गंभीरता थी। उसने पैसे को परमेश्वर के प्रति और उन लोगों के प्रति उतरदायित्व की एक महान भावना के साथ संभाला, जिन्होंने उसे इसे सौंपा था। पौलुस चाहता था कि उसका आचरण न केवल परमेश्वर के सामने बल्कि मनुष्यों के सामने भी सच्चा हो।

यही कारण है कि ऑल पीपल्स चर्च में, हम अपनी सभी लेखा बहियों को क्रम में रखने का पूर्ण प्रयास करते हैं। हम इस बात पर भी ज़ोर देते हैं कि सभी बिल और सभी वित्तीय लेनदेन का विवरण बनाकर रखा जाए ताकि यदि कोई हमसे प्रश्न करे तो हमारे पास सभी रिकॉर्ड सही क्रम में रहेंगे। हमें अतिरिक्त प्रयास करने की आवश्यकता है

ताकि हम परमेश्वर और मनुष्य दोनों को सही विवरण देने की स्थिति में आ सकें।

इफिसियों 4:25
इस कारण झूठ बोलना छोड़कर हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम आपस में एक दूसरे के अंग हैं।

यह अजीब है कि हम कैसे "प्रभु की स्तुति करो!" कहते हैं और कलीसिया में एक दूसरे से निरंतर झूठ बोलते रहते हैं। बाइबल हमें झूठ को दूर करने और एक दूसरे से सच बोलने के लिए कहती है। हम सभी मसीह की देह के अंग हैं और हमें एक दूसरे से सच बोलना चाहिए।

1 पतरस 2:12
अन्यजातियों में तुम्हारा चालचलन भला हो; इसलिये कि जिन जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जान कर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देख कर; उन्हीं के कारण कृपा दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें।

जब भी संसार के लोग हमें देखते हैं, तो वे हमें ईमानदार के रूप में पहचानने में सक्षम हों। यह ईमानदारी और सत्यनिष्ठा का स्तर है जिसे हमें बनाए रखना है क्योंकि जब वे हमारी ओर देखें, तो उनके पास हमारी ओर उंगली उठाने का कोई कारण न हो।

2
परमेश्वर हमारी ईमानदारी को जाँचता और जानता है (या उसके अभाव को!)

परमेश्वर हमारी ईमानदारी को परखता और जानता है। हमारे पासबान कभी भी हमारी ईमानदारी के स्तर को नहीं जान पाएंगे। चाहे हम हमारे विवरण द्वारा हमारे बारे में गलत जानकारी दें और रविवार की सुबह कलीसिया जाएं और परमेश्वर की आराधना करें, हमारे पासबान को इसका कभी पता नहीं चलेगा।परंतु परमेश्वर जानता है। वह हमारी ईमानदारी या उसका अभाव जानता है। राजा दाऊद कहता है, *"यहोवा मेरे धर्म और खराई के अनुसार मेरा न्याय चुका दे"* (भजन संहिता 7:8)।

दाऊद वचन में प्रार्थना करता है: *"हे यहोवा, मेरा न्याय कर, क्योंकि मैं खराई से चलता रहा हूं, और मेरा भरोसा यहोवा पर अटल बना है। हे यहोवा, मुझ को जांच और परख; मेरे मन और हृदय को परख"* (भजन संहिता 26:1,2)। कितनी सामर्थी प्रार्थना है! क्योंकि दाऊद ईमानदारी से चलता था, वह प्रार्थना करने में सक्षम था—ताकि परमेश्वर उसे सही ठहराए। कई बार हम कहते हैं, "अगर मैं अपने बॉस से कहूं कि मैं झूठ नहीं बोलूंगा, तो मेरी नौकरी जा सकती है।" परमेश्वर की स्तुति हो यदि आप ऐसी स्थिति में हैं जहां आप अपनी ईमानदारी के कारण अपनी नौकरी खो देंगे, क्योंकि तब आप प्रार्थना कर सकते थे जैसे दाऊद ने प्रार्थना की थी और प्रभु से बिनती कर सकते हैं कि वह आपको सही ठहराए।

परंतु, यदि हम ईमानदारी से नहीं चलते, तो हम परमेश्वर से बिनती नहीं कर सकते कि वह हमें सही ठहराए। भजनकर्ता के जैसे,

हमें यह कह पाने में सक्षम होना चाहिए कि हम ईमानदारी से चले, ईमानदारी से काम किया और वही किया जो हम जानते थे कि सही है, और फिर परमेश्वर से हमारे युद्ध को लड़ने के लिए कहें।

यिर्मयाह 23:23,24
23 यहोवा की यह वाणी है, क्या मैं ऐसा परमेश्वर हूँ, जो दूर नहीं, निकट ही रहता हूँ?
24 फिर यहोवा की यह वाणी है, क्या कोई ऐसे गुप्त स्थानों में छिप सकता है, कि मैं उसे न देख सकूं? क्या स्वर्ग और पृथ्वी दोनों मुझ से परिपूर्ण नहीं हैं?

परमेश्वर पवित्रशास्त्र में एक रोचक प्रश्न करता है—*"क्या कोई ऐसे गुप्त स्थानों में छिप सकता है, कि मैं उसे न देख सकूँ?"* (यिर्मयाह 23:24अ)। हम स्वयं और अपने बेईमानी के कामों को परमेश्वर से एक क्षण के लिए भी छिपाकर यह नहीं मान सकते हैं कि परमेश्वर हमें नहीं देख रहा है। बेशक(निःसंदेह), कोई और मनुष्य हमें देख नहीं रहा होगा, किन्तु पृथ्वी पर ऐसा कोई गुप्त स्थान नहीं है जहां हम जा सकें, जहां परमेश्वर हमें नहीं देख रहा है। हो सकता है कि हम अपने कंप्यूटर के सामने बैठे हों और मासिक रिपोर्ट में तरह-तरह के झूठ लिख रहे हों और सोचते हों कि किसी को कुछ पता नहीं चलेगा। किन्तु याद रखें परमेश्वर देख रहा है। वह हमारे हृदय की ईमानदारी को जानता और परखता है।

इब्रानियों 4:13
और सृष्टि की कोई वस्तु उस से छिपी नहीं है वरन जिस से हमें काम है, उस की आंखों के साम्हने सब वस्तुएं खुली और बेपरदा हैं।

ऐसा बिल्कुल कुछ भी नहीं है जिसे हम परमेश्वर से छिपा सकते हैं । हमें एक ऐसे स्थान पर आने की आवश्यकता है जहां हमारे पास परमेश्वर का पवित्र भय हो जो हमें ईमानदारी और खराई से जीने में सहायता करे।

3
हम अब भी ईमानदारी के साथ समझौता क्यों करते हैं?

हम में से अधिकांश लोग उन सारी बातों से परिचित हैं जो हमने अब तक पढ़ी हैं। बचपन से, हमें सिखाया गया है कि झूठ बोलना गलत है, हमें ईमानदार होना चाहिए, ईमानदारी से चलना चाहिए इत्यादि। हम उन सभी वचनों से भी परिचित होंगे जिनका अब तक उल्लेख किया गया है। हमने अपनी बाइबल में उन्हें रेखांकित भी किया होगा!

परंतु हमें स्वयं से इन प्रश्नों को पूछना आवश्यक है :

- हम अब भी झूठ क्यों बोलते हैं?
- ऐसा क्यों है कि चाहे हम लंबे समय से मसीही क्यों न हों, फिर भी हम अपने कार्यों एवं, सेवकाई, आदि में बेईमान हैं? प्रायः, हम लोगों को बताते हैं कि हम किसी विशिष्ट कार्य के लिए पैसा एकत्रित कर रहे हैं और उस पैसे का उपयोग किसी और काम के लिए करते हैं।
- परमेश्वर के लोग जो इन सब बातों को जानते हैं और वचन में इन बातों को पढ़ा भी है, फिर भी वे बेईमान क्यों हैं?

कुछ कारण है कि हम क्यों आज भी बेईमानी से काम करते हैं। कुछ कारण हैं जो हमें हमारे जीवन में ईमानदारी, खराई, और निष्ठा बनाए रखने से रोकते हैं। कुछ सम्भवनीय कारण।

परमेश्वर का वास्तविक भय नहीं—परमेश्वर के अनुग्रह के महत्व को सरलता से लेना

कभी कभी हम उन वचनों से इतने परिचित हो जाते हैं जो परमेश्वर की क्षमा, दया, अटल प्रेम, और भलाई के बारे में बताते हैं, कि हम उन्हें सरल समझने लगते हैं। हमें ऐसा लगता है कि हम झूठ बोलते रहे और बेईमानी करते रहे, फिर भी परमेश्वर हमें क्षमा करेगा। हमारे जीवन में परमेश्वर का वास्तविक भय नहीं है। *"अधर्म का प्रायश्चित कृपा, और सच्च्चाई से होता है, और यहोवा के भय मानने के द्वारा मनुष्य बुराई करने से बच जाते हैं"* (नीतिवचन 16:6)। केवल प्रभु का सच्चा भय ही व्यक्ति को बुराई से दूर रखेगा। हमें परमेश्वर से इतना भय रखना और आदर करना है कि हम पाप बेईमानी, झूठ, और अधर्म में न डूब पाएं। जब परमेश्वर का भय नहीं होता, तब हम जो चाहते हैं वही करते हैं। यह सच है कि हम परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर हैं परंतु वहीं हमारे हृदय में परमेश्वर का भय भी होना चाहिए।

यह दुख की बात है कि परमेश्वर के कुछ सेवकों और प्रचारकों के जीवन में परमेश्वर का भय नहीं है और जब वे अपने पुलपिट से नीचे उतरते हैं, और झूठ बोलने से नहीं हिचकिचाते और सब प्रकार के गलत काम करते हैं। जब हम जो कि, परमेश्वर के सेवक हैं, परमेश्वर का भय नहीं रखते, तो हम लोगों को परमेश्वर का भय रखना कैसे सिखाएंगे? हमें ऐसे स्थान पर आने की **आवश्यकता** है जहां हमारे पास परमेश्वर का भय है।

मनुष्य का भय

कभी कभी हम लोगों के भय के कारण झूठ बोलते हैं—हमें डर लगता है कि यदि हम उन्हें सच बताएंगे तो उनकी प्रतिक्रिया क्या होगी। हमें मनुष्य के डर पर विजय पाने की आवश्यकता है! हमें इतना साहसी

बनना है कि हम सच बोलें और धार्मिकता में चलें, फिर हमें चाहे किसी का भी सामना क्यों न करना पड़े!

परिणामों का भय

"यदि मैं झूठ बोलकर इस परिस्थिति से अपने आपको बाहर न निकालूं, तो मैं उसमें फंस जाऊंगा, इसलिए मैं झूठ के सहारे इसमें से बाहर निकल जाऊंगा" यह दूसरा बहाना लोग झूठ बोलने के लिए बनाते हैं। हमें इतना साहस रखना है कि हम ईमानदारी के साथ चलें, फिर चाहे उसके परिणाम कुछ भी हों। याद रखें, जब हम ईमानदारी के साथ चलते हैं, तब परमेश्वर हमारी ओर होता है!

प्रतिष्ठा / घमण्ड

कभी कभी हम झूठ बोलते हैं क्योंकि हम अपनी प्रतिष्ठा और अंहकार को बचाना चाहते हैं जो दांव पर लगे होते हैं। उदाहरण के तौर पर, जब कोई हमें पूछता है कि क्या हमने अपनी परीक्षाएं पास की, तो हम, भले ही वह सच न होते हुए भी "हाँ" कहते हैं।

दृढ़ विश्वास निश्चय के बदले सुविधा से जीवन बिताना

हम दृढ़ निश्चय के बदले सुविधा के अनुसार जीवन बिताने की प्रवृत्ति रखते हैं क्योंकि दृढ़ निश्चय द्वारा जीने के लिए बहुत अत्याधिक प्रयास की आवश्यकता होती है। जब हम आश्वस्त हो जाते हैं कि हमें हर समय सच बोलना चाहिए, तो हमें सच बोलना ही है, फिर उसकी कीमत चाहे जो हो। सुविधा कहती है: "यदि सरल है, तो मैं सच बोलूंगा; यदि यह कठिन है, तो मैं झूठ बोलकर अपना रास्ता बाहर निकालूंगा।" कृपया अपने आपको बताएं कि जिस बात का आपने निश्चय किया है उसके अनुसार आप जीवन बिताएंगे! हमें विश्वास से जीना है, सुविधा से नहीं।

हमें यह दृढ़निश्चय करना है कि हमें विश्वास, सत्य, और ईमानदारी के साथ जीने वाले स्त्री और पुरुष बनने की आवश्यकता है।

नाराज़ करने / चोट पहुंचाने का भय

कभी कभी लोग इसलिए झूठ बोलते हैं क्योंकि वे उन लोगों को चोट नहीं पहुंचाना चाहते जिनसे वे बोल रहे हैं। झूठ तो झूठ है| भले ही आप उसे अच्छे उद्देश्य से बोलते हैं!

छिपाकर अच्छा बनने की कोशिश

कभी कभी हम तब झूठ बोलते हैं जब हम किसी दोस्त की गलती छिपाने की कोशिश करते हैं। झूठ तो झूठ है—चाहे आप कितने ही ईमानदार क्यों न हो! इस बात को याद रखें: सत्य अपने आप खड़ा हो सकता है; सत्य को झूठ द्वारा बचाव की आवश्यकता नहीं होती!

4
बेईमानी के परिणाम

ईमानदारी के विषय में समझौता करने की हमारी प्रवृत्ति का एक अन्य कारण यह है कि हम वास्तव में इसके परिणामों की गंभीरता को नहीं समझते हैं। कई बार, हम सोचते हैं कि अगर हम जाकर परमेश्वर से क्षमा मांगें तो सब ठीक हो जाएगा। बिल्कुल, परमेश्वर हमें क्षमा कर देता है, किन्तु फिर भी हमें परिणामों को भुगतना होगा । परमेश्वर सभी परिणामों को बदलने वाला नहीं है। हमने जो बोया है उसे काटना ही पड़ेगा। हमें बेईमानी के परिणामों को पूरी तरह से समझने की आवश्यकता है। आइए कुछ वचनों को देखें

नीतिवचन 19:5

झूठा साक्षी निर्दोष नहीं ठहरता, और जो झूठ बोला करता है, वह न बचेगा।

कई बार, हम बच निकलने के लिए झूठ का उपयोग करते हैं। किन्तु यह नहीं समझ पाते कि परमेश्वर का वचन कहता है: *"... जो झूठ बोला करता है, वह न बचेगा"* (नीतिवचन 19:5आ)। हम झूठ बोलकर विशिष्ट परिस्थिति से बाहर निकलने पर प्रसन्न होते होंगे, किन्तु हम यह नहीं समझते कि वह जल्द ही हमें पकड़ लेगा, जब तक कि हम प्रायश्चित न करें और हमारे आसपास की बातों से न निपटें।

- हम प्रायः कठिन परिस्थितियों से निकलने के लिए झूठ बोलते हैं यह न जानकर कि हम अपने आप को और बड़े जाल में फंसा रहे हैं!

नीतिवचन 20:17
चोरी-छिपे की रोटी मनुष्य को मीठी तो लगती है, परंतु बाद में उसका मुंह कंकड़ों से भर जाता है।

छल-कपट से जो रोटी मिलती है वह शुरू में मीठी हो सकती है,किन्तु यदि वह छल-कपट से प्राप्त हुई है, तो बाइबल कहती है कि *"मुंह कंकड़ों से भर जाता है"* (नीतिवचन 20:17आ)। छल तो तब होता है जब कोई अपने विवरण (रेज़्यूमे) में लिखता है कि उसके पास छः साल का कार्य अनुभव है जबकि उसके पास केवल छः महीने का अनुभव है! जो धन बेईमानी से कमाया जाता है वह भले ही शुरू मीठा लगे, लेकिन बाद में मुंह कंकड़ों से भर जाता है। नीतिवचन 21:6 भी यही ईमानदारी बताता है—*"जो धन झूठ के द्वारा प्राप्त हो, वह वायु से उड़ जाने वाला कुहरा है, उसके ढूँढ़नेवाले मृत्यु ही को ढूँढ़ते हैं।"* बेईमानी से हमें जो धन मिलता है वह हमें मृत्यु और विनाश की ओर ले जाता है, और वह धन जल्द ही गायब हो जाता है।

- बेईमानी एक "त्वरित और सरल" तरीका लग सकता है, लेकिन इसके परिणाम जल्द ही हमारे सामने होंगे!

नीतिवचन 29:12
जब हाकिम झूठी बात की ओर कान लगाता है, तब उसके सब सेवक दुष्ट हो जाते हैं।

- जब अगुवे के पद का व्यक्ति बेईमान होता है, तो उसके अधीनस्थ सभी लोग उसी मार्ग पर चलेंगे!

होशे 10:12,13
12 अपने लिये धर्म का बीज बोओ, तब करूणा के अनुसार खेत काटने पाओगे; अपनी पड़ती भूमि को जोतो; देखो, अभी यहोवा के पीछे हो लेने का समय है, कि वह आए और तुम्हारे ऊपर उद्धार बरसाए।
13 तुम ने दुष्टता के लिये हल जोता और अन्याय का खेत काटा है; और तुम ने

धोखे का फल खाया है। और यह इसलिये हुआ क्योंकि तुम ने अपने कुव्यवहार पर, और अपने बहुत से वीरों पर भरोसा रखा था।

होशे 10:12,13 एक बहुत ही रोचक ईमानदारी बताता है। हर बार जब हम झूठ बोलते हैं, हम अधर्म, दुष्टता को बोते हैं,और,कभी न कभी हम अपने इस झूठ का फल खाते है। झूठ अपना फल देगा और हम उसे खाएंगे। इसलिए, हमें यह समझना चाहिए कि यहाँ हमारे झूठ और बेईमानी का एक परिणाम होता है।

- हमारे द्वारा बोए गए हर झूठ के लिए *"झूठ का फल"* होता है!

यूहन्ना 8:44
तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते हो। वह तो आरम्भ से हत्यारा है, और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उस में है ही नहीं जब वह झूठ बोलता, तो अपने स्वभाव ही से बोलता है; क्योंकि वह झूठा है, वरन झूठ का पिता है।

- जब हम झूठ बोलते हैं, तब हम शैतान के कामों में साझेदार होते हैं!

बाइबल कहती है कि झूठ को आग की झील में डाला जाएगा—सबसे गंभीर परिणाम।

प्रकाशितवाक्य 21:8
पर डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों, और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है : यह दूसरी मृत्यु है।

बाइबल कहती है कि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से हमारा उद्धार हुआ है। वह हर व्यक्ति जो प्रभु यीशु मसीह के ज्ञान के निकट आता है वह उद्धार पाएगा और यीशु मसीह में अनुग्रह, दया, क्षमा, माफ़ी, और उद्धार है। परंतु एक गंभीर परिणाम है जो विशिष्ट तौर पर परमेश्वर द्वारा उल्लेख किया गया है—कि यदि हम झूठे हैं तो हमें नरक भेज

दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 21:8)। शैतान झूठ का पिता है और उसमें कोई ईमानदारी नहीं है (यूहन्ना 8:44)। इसलिए परमेश्वर झूठ बोलने वालों से कहेगा, “यदि तू झूठ बोलता रहे, तो अपने पिता के पास जा!” झूठ बोलने और सच न बोलने का इतना गंभीर परिणाम! हमें यह समझना है कि बेईमानी के अपने ही परिणाम होंगे—इस वर्तमान संसार में और आने वाले संसार में भी। यह हमारे लिए एक पवित्र भय का कारण होना चाहिए जो हमें यह कहने के लिए प्रेरित करता है, “परमेश्वर, मैं बुराई नहीं बोना चाहता, मैं अपने झूठ का फल नहीं खाना चाहता। मैं अधर्म और दुष्टता की फसल नहीं काटना चाहता।”

- अंतिम परिणाम—झूठे लोग नरक में जाते हैं!

5
ईमानदार लोगों की आशीषें

जो लोग ईमानदारी धार्मिकता और सत्यनिष्ठा का अनुसरण करते हैं, उनके लिए अद्भुत आशीषें हैं।

आशीष और अनुग्रह

भजन संहिता 5:12
क्योंकि तू धर्मी को आशिष देगा; हे यहोवा, तू उसको अपने अनुग्रहरूपी ढाल से घेरे रहेगा।

मान लीजिए कि आप साक्षात्कार के लिए जा रहे हैं और परमेश्वर से उनके अनुग्रह के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। बाइबल कहती है कि परमेश्वर धर्मी पर अपना अनुग्रह प्रकट करेगा। यदि आपने अपने विवरण में (रेज्यूमे में) झूठ दिखाया है, तो आप परमेश्वर के अनुग्रह को भूल जाइए क्योंकि वह कहता है कि वह धर्मी को आशिष देगा उनपर अपना अनुग्रह बरसाएगा—अधर्मी और बेईमान व्यक्ति पर नहीं।अतः, हमें क्या करना चाहिए? रेज़्यूमे में झूठे "छः वर्ष" लिखने के बजाय, हमें ईमानदारी के साथ कहना है कि हमारे पास छः महीनों का अनुभव है। फिर हमें साहस के साथ परमेश्वर से कहना है कि छः वर्षों का अनुभव रखने वाले व्यक्ति के बराबरी की नौकरी प्राप्त करने हेतु हम उस पर निर्भर हैं। अपने रेज्यूमे में झूठी जानकारी लिखने के बजाय ऐसा करना उचित होगा। परमेश्वर केवल वहीं अपना अनुग्रह देता है, जहां ईमानदारी एवं धार्मिकता दिखाई देती है,

संरक्षण और उत्तरित प्रार्थना

भजन का लेखक कहता है, *"ईमानदारी और सीधाई"* मुझे सुरक्षित रखें, क्योंकि मुझे तेरी ही आशा है" (भजन संहिता 25:21)। यह कितनी सुरक्षित स्थिति है—जब हम परमेश्वर को यह बताने में सक्षम होते हैं कि हम ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा से चल रहे हैं और, फिर यह कहना कि हम जानते हैं कि हम सुरक्षित एवं संरक्षित रहेंगे।

भजन संहिता 34:15
यहोवा की आंखे धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान भी उसकी दोहाई की ओर लगे रहते हैं।

भजन संहिता 34:17
धर्मी दोहाई देते हैं और यहोवा सुनता है, और उन को सब विपत्तियों से छुड़ाता है।

भजन संहिता 34:19
धर्मी पर बहुत सी विपत्तियां पड़ती तो हैं, परन्तु यहोवा उसको उन सब से मुक्त करता है।

उत्तरित प्रार्थना और संरक्षण धर्मी के लिए हैं। जब हम यह कदम उठाते हैं तब हमें भले ही कई प्रकार के क्लेशों का सामना करना पड़े, परंतु परमेश्वर हमें उन में से निकालेगा।

स्थायी सुरक्षा

नीतिवचन 12:19
ईमानदारी सदा बनी रहेगी, परन्तु झूठ पल ही भर का होता है।

सत्य स्थायी रहता है! झूठ भले ही आज अपना उद्देश्य पूरा करता हो, परंतु कल वे मिट जाएंगे। हम उस पर निर्भर नहीं रह सकते। हमें पहले झूठ को बचाने के लिए दूसरा झूठ तैयार करना पड़ेगा। झूठ में

कोई सुरक्षा नहीं है। परंतु, जब हम सच बोलते हैं, तब हम सुरक्षित महसूस करते हैं और हम सुरक्षित होते भी **हैं**। हमें अपने आप को बचाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सच स्वयं आपको बचाएगा!

स्पष्टता / प्रकाश या ज्योति

भजन संहिता 97:11
धर्मी के लिये ज्योति, और सीधे मन वालों के लिये आनन्द बोया गया है।

जब हम धार्मिकता में चलते हैं, तब हम अपेक्षा कर सकते हैं कि परमेश्वर की ज्योति हमारे मार्गों को प्रकाशित करे। जब हम धार्मिकता में नहीं चलते, तब हम यह शिकायत नहीं कर सकते कि मार्ग अंधकार से भरा और भविष्य उदासी भरा है। उस बारे में इस तरह विचार करें—जितनी बार हम झूठ बोलते हैं, हम वास्तव में हमारे जीवनों में परमेश्वर की “ज्योति को बुझाते” हैं और जितनी बार हम धार्मिकता में चलते हैं, उतनी बार हम उस “ज्योति को जलाते” हैं ताकि हमें मार्ग स्पष्ट दिखाई दे!

विरासत

नीतिवचन 20:7
धर्मी जो खराई से चलता रहता है, उसके पीछे उसके लड़के बाले धन्य होते हैं।

जब हम अपनी ईमानदारी में चलते हैं, तो हम अपने बच्चों के लिए एक आशीष छोड़ जाते हैं। इसके विपरीत, जब हम ईमानदारी से नहीं चलते हैं, तो हम अपने बच्चों के लिए एक अभिशाप छोड़ जाते हैं। हम अपने बच्चों के लिए जो भी विरासत छोड़ते हैं, वह इस बात से तय होती है कि हम ईमानदारी से चलते हैं या नहीं।

6
प्रतिक्रिया—मुक्ति,पश्चाताप, त्याग, और समर्पण

झूठ बोलने वाली आत्मा के बंधन तोड़ें

हमें उस जगह उठकर ऐसे स्थान में जाना चाहिए जहां हम केवल ईमानदारी को जानते ही नहीं, बल्कि उसे अपने जीवन में लागू भी करते हैं। आप में से कुछ लोग ऐसी स्थिति में हो सकते हैं जहां झूठ बोलना दूसरे स्वभाव की तरह है और आप नहीं जानते कि आप ऐसा क्यों करते हैं। बाइबल कम से कम दो स्थानों पर झूठ बोलने वाली आत्माओं का उल्लेख करती है (1 राजा 22:22,23; 2 इतिहास 18:21,22)। इसका अर्थ है कि ऐसी दुष्टात्माएं हैं जो झूठ को बढ़ावा देती हैं और लोगों के चरित्र और आचरण को प्रभावित करती हैं। यह संभव है कि आपका नया जन्म हुआ हो, आप आत्मा से भरे हुए हों, और अन्य भाषाओं में बात कर रहे हों, किन्तु यह भी हो सकता है कि आप एक झूठ बोलने वाली आत्मा के नियंत्रण में हैं। परमेश्वर को ढूँढे और बंधन से मुक्ति पाएं!

झूठ के प्रति आपका दृष्टिकोण बदलें

नीतिवचन 13:5
धर्मी झूठे वचन से बैर रखता है, परन्तु दुष्ट लज्जा का कारण और लज्जित हो जाता है।

भजन संहिता 119:163
झूठ से तो मैं बैर और घृणा रखता हूं, परन्तु तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूं।

यद्यपि हम में से अधिकांश लोग जानते हैं कि बेईमानी परमेश्वर को स्वीकृत नहीं है, इसके प्रति हम सहनशील हैं, दूसरों में और स्वयं में, दोनों में। हमें झूठ के प्रति सहनशीलता से हटकर किसी भी प्रकार की बेईमानी के प्रति पवित्र असहनशीलता की ओर बढ़ने की आवश्यकता है। हम लोगों के प्रति असहनशील नहीं हैं, बल्कि हम झूठ और बेईमानी की प्रथा के प्रति असहनशील हैं। हमें झूठ से घृणा करने की आवश्यकता है। बाइबल कहती है, *"धर्मी झूठे वचन से बैर रखता है, परन्तु दुष्ट लज्जा का कारण और लज्जित हो जाता है"* (नीतिवचन 13:5)। हमें झूठ के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलने की आवश्यकता है। आइए हम अपने जीवन से झूठ को दूर करने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह को ढूँढे। आइए हम सच बोलने के लिए दृढ़ संकल्प करें, चाहे यह कितना भी दुखद हो।

बेईमानी के साथ साझेदारी अस्वीकार करें

भजन संहिता 101:7
जो छल करता है वह मेरे घर के भीतर न रहने पाएगा; जो झूठ बोलता है वह मेरे साम्हने बना न रहेगा।

दूसरे लोगों की बेईमानी में सम्मिलित न हों। जब हम लोगों के साथ विभिन्न प्रकार की साझेदारी में काम करते हैं-चाहे कार्यस्थल में या कोई अन्य स्थान पर, तब यह सच होता है। कभी-कभी जब हम दूसरे लोगों को झूठ बोलते हुए देखते हैं, तो हम उस झूठ के बारे में बोलने या अस्वीकार करने के बजाय उसके साझेदार बन जाते हैं। हम मानते हैं कि यह उस व्यक्ति का झूठ है और क्योंकि हमने यह नहीं कहा, अतः हम स्वच्छ हैं। सच तो यह है कि हम एक सहकर्मी के रूप में उस झूठ में साझेदार हैं।

मुझे एक जवान व्यक्ति याद आता है जो चर्च शुरू करने के शुरुआती साल में पूरे एक साल तक हमारी सभी सेवाओं, प्रार्थना

सभाओं और कार्यक्रमों में शामिल होता था। मैं वास्तव में प्रभावित था, हालांकि मैंने उससे कुछ नहीं कहा। एक रविवार की सुबह, मैंने “समर्पण की सामर्थ” पर प्रचार किया और अन्य बातों के अलावा, ईमानदारी के प्रति समर्पित होने के बारे में बात की। कलीसिया की सेवकाई के अंत में, यह व्यक्ति मेरे पास आया और उसने मुझे बताया कि उसने विदेश में एक बाइबल कॉलेज में आवेदन किया है। और वीज़ा और अन्य आवश्यकताओं के लिए, वह चाहते थे कि मैं एक पत्र लिखूं जिसमें कहा हो कि वह पिछले एक साल से ऑल पीपल्स चर्च के साथ काम कर रहा है। वह यह भी चाहता था कि मैं यह कहूं कि चर्च उसे बाइबल कॉलेज में पढ़ने के लिए भेज रहा है और पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद वह वापस आकर चर्च के साथ काम करेगा। हालांकि, वह युवक पत्र में जो कुछ भी लिखना चाहता था, वह सच नहीं था। मैं चौंक गया था! मैंने उसे किसी और दिन मुझसे मिलने के लिए कहा। जब हम मिले तो मैंने उसे बताया कि उसके लिए ऐसा अनुरोध करना भी गलत था। मैंने उससे कहा कि मैं उसे एक पत्र दूंगा जिसमें लिखा होगा कि वह उस अवधि में नियमित रूप से चर्च में उपस्थित रहा था, और मैंने उसे पत्र सौंप दिया।

मैं बिल्कुल यही बताने की कोशिश कर रहा हूं। हम नियमित रूप से गिरजाघर जाते होंगे, कई संदेशों को सुनते होंगे परंतु फिर भी ऐसे बेईमानी के कामों का सहारा लेते हैं। जब ऐसे लोगों से हमारी भेंट होती है, तो हमारे मन में विचार आता है कि वे कौनसी कलीसिया में जाते होंगे और क्या उन्हें ईमानदारी की आवश्यकता के बारे में सिखाया गया है। मैं मसीही भाई और बहनों के कई उदाहरण याद करता हूं जो बेईमानी,और अधर्म में चलते हैं।

परंतु **अब** यह सब बदलना चाहिए। हमें बेईमानी को सहना बंद कर देना चाहिए और बेईमानी के सभी स्वरूपों से घृणा करना चाहिए और उनका विरोध करना चाहिए।

पवित्रता हेतु प्रार्थना

आइए हम पवित्रता हेतु प्रार्थना करें। भजन के रचयिता ने इस प्रकार प्रार्थना की—*हे यहोवा, मेरे मुख का पहरा बैठा, मेरे हाठों के द्वार पर रखवाली कर!"* (भजन संहिता 141:3) और *"मुझ को झूठ के मार्ग से दूर कर; और करूणा कर के अपनी व्यवस्था मुझे दे"* (भजन संहिता 119:29)।

आइए हम परमेश्वर के समक्ष ईमानदारी, खराई और धार्मिकता के स्थान पर चलें। हम जानते हैं कि हमने उद्धार पाया है। हम जानते हैं कि परमेश्वर करूणा, प्रेम, और दया का परमेश्वर है। परंतु, हम इस बात को सहजता से न लें। हम परमेश्वर के अनुग्रह का गलत उपयोग न करें। हमें इस क्षेत्र में परमेश्वर के स्पर्श की आवश्यकता है क्योंकि हम सभी विभिन्न स्तरों पर बेईमान रहे हैं।

प्रार्थना

परमेश्वर, मुझसे झूठ का मार्ग दूर कीजिए। मुझसे ईमानदारी और सत्यनिष्ठा की कमी को दूर कीजिए । बेईमानी के प्रति मेरी सहनशीलता को दूर कीजिए और मुझे बेईमानी से नफरत करने दीजिए। मेरे जीवन में एक "सर्जरी(शल्य चिकित्सा)" कीजिए, प्रभु! आपके आत्मा की तलवार से मेरे अंदर की गहराई में जाकर इसे जड़ से पकड़कर निकाल दीजिए। मैंने अपने जीवन में बहुत लंबे समय तक बेईमानी को सहन किया है, किन्तु अब मैं आपके पास आता हूं और आपसे इसे समाप्त करने के लिए कहता हूं। कुल्हाड़ी जड़ों पर रखकर इसे जड़ से हटा दीजिए। मुझसे झूठ, बेईमानी , और अधर्म दूर कीजिए । मैं एक ऐसा व्यक्ति बनना चाहता हूं जो आपके सामने ईमानदारी से चले एवं स्पष्टता लिए, अनुग्रह के लिए, आशीषों के लिए आपकी ओर देखे। मैं ईमानदारी से आचरण करने वाला और आपको प्रसन्न करने वाला व्यक्ति बनाना चाहता हूँ । चाहे मैं लोगों को नाराज़ कर दूं, फिर भी

कोई बात नहीं। हे मेरे परमेश्वर, मैं आपको प्रसन्न करना चाहता हूं, मैं आपको आनंद देना चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि आप मुझसे आनंदित और उत्साहित हों। प्रभु, केवल पवित्र आत्मा का शुद्ध करने वाला कार्य और सामर्थ मेरे प्राण की गहराई तक जा सकता है और मेरे जीवन में इस दोष की जड़ों को काट सकता है। मैं अपने आपको आपके सिंहासन के सामने खड़ा करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि अभी से आप आपके पवित्र आत्मा की सामर्थ द्वारा इस कार्य को शुरू कीजिए। यीशु के नाम में मैं प्रार्थना करता हूं। आमेन।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु***

परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है" (रोमियों 6:23)। यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" (प्रेरितों के काम 10:43)।

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा "(रोमियों 10:9)|

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लोहू बहाया और मेरे पापों का

दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए।

आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

ऑल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केंद्रित, आत्मा से परिपूर्ण** पारिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधारित संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है।

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझोते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें**: apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें : **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses—Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Praying in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work—Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। PDF, आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में विनामूल्य ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक और प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु वर्ग के लोगों लिए हैं, और जीवन में होने वाली चुनौतियों की विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती है।

किशोरों

व्यक्तिगत समायोजन

सम्बंधपरक चुनौतियां

शिक्षा में कम सफलता पाने वाले

कार्य सम्बंधित मुद्दे

परिवार/दम्पत्ति: विवाह पूर्व, वैवाहिक

आत्मिक समस्याएं

माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी

व्यवहार सम्बंधी विकार

व्यक्तित्व विकार

मनोवैज्ञानिक/भावनात्मक समस्याएं

तनाव / आघात

शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल

जिंदगी की सीख

क्रिसलिस काउंसलिंग सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए

वेबसाइट: **chrysalislife.org**
फ़ोन: +91-80-25452617 टोल फ्री (भारत के अंतर्गत) 1-800-300-00998
ईमेल: **counselor@chrysalislife.org**

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एँड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में विनामूल्य वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक / बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

खाता नाम: All Peoples Church
खाता संख्या: 50200068829058
IFSC कोड: HDFC0004367
बैंक: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru-560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें* ***apcwo.org/give***

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

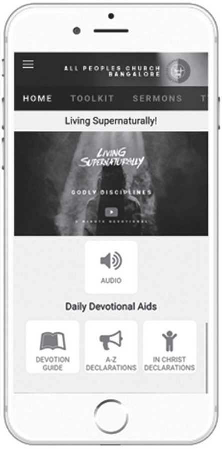

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी)में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (C.Th)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय प्रमाणपत्र (D.Th)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र (B.Th)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैम्पस**: कैम्पस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लीजिए
- **ऑनलाइन**: ऑनलाइन लाइव व्याखान में भाग लीजिए
- **ई-लर्निंग**: ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं की सुविधानुसार सीखनें के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन हेतु, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के विषय में अधिक जानकारी हेतु, कृपया इस वेबसाईट का अनुसरण करें: **apcbiblecollege.org**

आज संसार में भ्रष्टाचार, बेईमानी और रिश्वतखोरी का बोलबाला है। संसार ऐसे ही आगे बढ़ रहा है, क्योंकि उन्हें इसी तरह सिखाया गया है, इससे अच्छा वे नहीं जानते। जबकि, दुख की बात यह है कि हम परमेश्वर के लोगों में बेईमानी, अनैतिकता और ईमानदारी की कमी भी देखते हैं—क्योंकि कम से कम हममें इसका अच्छे से अनुसरण करने की समझ होना चाहिए।

हमें यह जानना चाहिए कि ईमानदारी, ईमानदारी, पवित्रता और धार्मिकता में कैसे चलना है, क्योंकि हम यह सब परमेश्वर के वचन में पढ़ते हैं। इससे भी बुरी बात यह है कि हम पासबानों, शिक्षकों और परमेश्वर के वचन के सेवकों के बीच अनैतिकता, बेईमानी और ईमानदारी की कमी देखते हैं। हममें से प्रत्येक को अपने प्रत्येक कार्य में ईमानदारी, ईमानदारी और सरलता के प्रति समर्पित होना चाहिए और यह पुस्तक हमें इन गुणों में आगे बढाने में सहायक होगी।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org